<u>दिनांक 27.01.2021 कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन</u>

कृषि विज्ञान केन्द्र, भाकृअनुप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली (उ॰प्र॰) द्वारा जिला ग्राम्य विकास अभिकरण के जिला मिशन मैनेजर तथा ब्लॉक मिशन मैनेजर हेतु दिनांक 27.01.2021 को एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय श्री चन्द्र मोहन गर्ग जी, मुख्य विकास अधिकारी, जनपद बरेली थे। उन्होंने अपने सम्बोधन में सभी प्रशिक्षणार्थियों से प्रशिक्षण के दौरान दी जा रही जानकारियों को बेहतर तरीके से समझने तथा उसे अपने कार्य में अपनाने के लिये कहा साथ ही अवगत कराया कि अब जनपद में जिला मिशन मैनेजर तथा ब्लॉक मिशन मैनेजर की संख्या बढ़कर 40 हो गयी है अतः आपका कार्य जनपद में दृष्टिगत होना चाहिये। आपको समूह बनाकर, उन्हें विशेष क्षेत्रों में प्रशिक्षित कराके, उनसे उत्पाद बनवाकर उसकी ब्रांडिंग तथा मार्केटिंग करवानी है जिससे की समूहों से जुड़े परिवारों की आय तथा कुशलता में वृद्धि हो सके। प्रशिक्षण के लिये कृषि विज्ञान केन्द्र तथा जनपद की अन्य संस्थायें आपके सहयोग के लिये सदैव तत्पर हैं। डॉ॰ महेश चन्द्र, संयुक्त निदेशक (प्रसार शिक्षा) ने विभिन्न समूहों के उदाहरण देते हुये बताया की समूहों के गठन के बाद उनको इस प्रकार से तैयार करना चाहिये कि वे आत्मनिर्भर होकर अपनी आवश्यकता के कार्य जैसे सरकारी योजनाओं की जानकारी प्राप्त करना, उन योजनाओं का लाभ लेकर अपने कार्य को आगे बढ़ाना, उत्पादों की ब्रांडिंग तथा पैकिंग करना, अपने उत्पादों के लिये बाजार तलाशना, उपयुक्त रेकॉर्ड्स का रख-रखाव करना तथा समूह से जुड़े निर्णय लेना आदि कार्य स्वयं कर सकें। श्री तेजवन्त सिंह, परियोजना निदेशक, जिला ग्राम्य विकास अभिकरण ने परियोजना से जुड़े जिला मिशन मैनेजर तथा ब्लॉक मिशन मैनेजर के कार्यों तथा दायित्वों के सम्बन्ध में जानकारी देते हुये उनसे विभाग की अपेक्षाओं के सम्बंध में चर्चा की।

श्री एम॰एम॰ प्रसाद, एल॰डी॰एम॰ ने समूहों के निर्माण, उनके बैंक खाते खुलवाने, समूह की बैठकों, समूह की बचत, समूहों को बैंक लोन की सीमा बनवाने, बैंक से तथा समूह का आंतरिक लेनदेन, विभिन्न प्रकार के रेकॉर्ड्स तथा उनका रखरखाव, ग्रेडिंग आदि के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी देते हुये बताया कि यदि हम समूह के कार्य नियमित रूप से करते रहेंगे तथा उसके अनुसार रेकॉर्ड्स का उचित रख-रखाव करेंगे तो समूह के सफल होने की संभावनायें बढ़ जायेंगी। श्री धर्मेन्द्र कुमार मिश्रा, डी॰जी॰एम॰ नाबार्ड ने अपने प्रस्तुतीकरण में स्वयं सहायता समूहों के अब तक के सफर, इनसे जुड़ी

विभिन्न योजनाओं, एक समूह को सफलतापूर्वक चलाने के लिये मुख्य बिन्दुओं, इस क्षेत्र की चुनौतियों स्वयं सहायता समूहों के क्षेत्र में उत्तर प्रदेश की वर्तमान स्थिति पर विस्तार से चर्चा की। डॉ॰ राज करन सिंह, अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र ने प्रशिक्षणार्थियों को मोटिवेशन की तकनीकों के सम्बन्ध में जानकारी दी जिससे वे अपने क्षेत्र की महिलाओं को समूह बनाकर एकजुट होकर कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकें। उन्होंने सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन तकनीकों के सम्बन्ध में भी जानकारी दी जिससे प्रशिक्षणार्थी अपने कार्यक्षेत्र में ग्रामीणों के सहयोग से कम समय में अधिक से अधिक आवश्यक जानकारी एकत्र कर सकें तथा कार्य क्षेत्र के सम्बन्ध में स्वयं भी जानकारी जुटा सकें। श्री राकेश पाण्डे विषय वस्तु विशेषज्ञ ने संस्थान के कार्यों तथा संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों, कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्य क्षेत्र के सम्बन्ध में जानकारी देते हुये बताया कि स्वयं सहायता समूहों के गठन के बाद उनके लिये कृषि से जुड़े कार्य जैसे फूड प्रोसेसिंग, फल-सब्जी परीक्षण, डेयरी व्यवसाय, सूकर पालन, बकरी पालन, मौन पालन, मुर्गी पालन, बटेर पालन, मशरूम उत्पादन, बत्तख पालन, मछली पालन आदि तथा ऑफ फार्म कार्य जैसे सिलाई-कढ़ाई, सर्फ बनाना, हैंड वाश बनाना, मोमबत्ती बनाना आदि कार्य अपनाकर कार्यों का समूहों को प्रशिक्षण दिलाकर ग्रामीण परिवारों की आय बढ़ाई जा सकती है। कार्यक्रम के अन्त में श्री दुर्गादत्त शर्मा ने सभी मुख्य अतिथि, अतिथि वक्ताओं तथा प्रशिक्षणार्थियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।